3

भाषा के डिज़ाइन फीचर्स

इन्सानी भाषा एक ऐसा औज़ार है जो हमारे व्यक्तित्व, व्यवहार, समाज व अन्य सभी ढाँचों व सम्पूर्ण जीवन का संचालन करती है। भाषा के बिना जटिल तकनीकी, सांस्कृतिक गहनता व समृद्धि, संवर्धित ज्ञान, आपस में गूँथे समाज व राज्य आदि कुछ भी शायद सम्भव नहीं हो पाते। यह सवाल महत्वपूर्ण है कि आखिर इन्सानी भाषा में ऐसा क्या है जो इन सब के लिए रास्ता बनाता है। जानवरों में भी सम्प्रेषण के कई उदाहरण मिलते हैं और सभी नहीं तो कम से कम कुछ जानवर तो इसके लिए ध्वनि का भी उपयोग करते हैं। इन सम्प्रेषणों के कुछ उदाहरण हैं - मधुमक्खियों का नाच, चिड़िया की पुकार, कुत्तों व भेड़ियों का इन्सानों के निर्देशों को समझना, वानरों का संवाद इत्यादि। इन सभी उदाहरणों व इन्सानी भाषाओं में संकेतों का इस्तेमाल होता है। फिर इन्सानी भाषा में ऐसा क्या विशेष है? इस प्रश्न पर आगे बढ़ने से पहले संकेतों, भाषा व इसके प्रयोजन को देखते हैं। जो भी सम्प्रेषित करना है उसके लिए इस्तेमाल किए गए संकेतों को, उस संवाद में शामिल दोनों भागीदारों को समझना होता है - वक्ता यानी सम्प्रेषक को भी व सुनने वाले को भी। अगर हम और गहराई से देखें तो प्रतीकों, शब्द चिन्हों, व संकेतों को मिलाकर ही सभी सम्प्रेषण सम्भव होते हैं।

संकेत कई तरह के हो सकते हैं, जैसे - गुर्राना, चिल्लाना, कराहना, बाँहें हिलाना, शरीर को लहराना आदि। हालाँकि चिम्पांज़ी, बबून आदि कुछ चिन्हों (Lexigram) का उपयोग कर सकते हैं, और गुरिल्ला को हम काफी शब्द सिखा सके हैं लेकिन वह सीखना सीमित ही है। इन्सानी भाषा में संकेतों के अलावा और बहुत से प्रतीक भी होते हैं। इन प्रतीकों को अलग-अलग क्रमों में जोड़ते हुए सभी संकेत बनते हैं और इनसे नए संकेत भी बन सकते हैं लेकिन यह अन्य जानवरों की भाषा में सम्भव नहीं है। यानी इन्सानी भाषाओं की व्यवस्था व ढाँचा खुला है और बाकी ढाँचे सीमित हैं।

1960 के दशक में एक भाषाई नृशास्त्री चार्ल्स एफ होकेट ने कुछ ऐसे गुणों को पहचानकर स्पष्टता से परिभाषित किया जो इन्सानी भाषाओं को जानवरों की भाषा से अलग करते थे। होकेट का मानना था कि इन्सानी भाषाओं के कुल 13 गुण हैं। इन 13 गुणों में से नौ गुण ऐसे हैं जो अन्य वानरों की भाषाओं में भी मौजूद हो सकते हैं लेकिन बाकी चार ऐसे गुण हैं जो मानव भाषाओं में ही हो सकते हैं और ये ही मानव भाषाओं की विलक्षण क्षमता का कारण हैं। हालाँकि उन्होंने उन सभी 13 फीचर्स को भाषा के डिज़ाइन फीचर्स कहा, ऐसे गुण जो सभी इन्सानी भाषाओं में किसी न किसी हद तक हैं। लेकिन ये चार महत्वपूर्ण गुण ही इन्सानी भाषा को समृद्ध व ताकतवर बनाते हैं जो किसी भी जानवर की भाषा में नहीं हैं। होकेट के शुरुआती विवेचन के अनुसार इन्सानी भाषाओं के ये विलक्षण गुण हैं: द्विविधता, विस्थापन, उत्पादकता और सांस्कृतिक हस्तान्तरण। इन चार गुणों में बाद में कुछ और विलक्षणताएँ भी जोड़ी गई हैं। इनमें से तीन तो होकेट ने ही बाद में जोड़ीं। हालाँकि अलग-अलग विद्वान इन गुणों और विलक्षणताओं की व्याख्या अलग-अलग ढंग से करते हैं लेकिन यह तो वे भी मानते हैं कि ये सिर्फ इन्सानों की भाषा के ही खास गुण हैं और हम आगे देखेंगे कि ये इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं।

पैटर्न की द्विविधता (Duality of Patterning)

आजकल अधिकांश लोगों के लिए अधिकांश समय वाणी (Speech) ही भाषा का माध्यम होती है। भाषा का आज का जो स्वरूप है हम उस तक कैसे पहुँचे यह अलग कहानी है। अभी हम वाणी आधारित भाषा की बात करेंगे (संकेत भाषा का उपयोग करने वालों के लिए भाषा का प्रमुख माध्यम संकेत होते हैं)। बोलने के लिए हम फेफड़ों से आती हवा को मुँह से बाहर निकालते हैं और साथ ही साथ, हम अपने मुँह के अलग-अलग हिस्सों को अलग-अलग तरह से हिलाते भी जाते हैं और इस तरह वाणी के लिए ध्वनियों का उत्पादन करते हैं – जो स्वर व व्यंजन होती हैं । हमारे हर कथन में ध्वनियों का एक क्रम होता है। हम कितनी ध्वनियाँ बना सकते हैं इसका कोई सीधा उत्तर नहीं है क्योंकि यह उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि हम ध्वनियों में कितना अन्तर करना चाहते हैं, लेकिन इन ध्वनियों की संख्या निश्चित रूप से बहुत ज़्यादा नहीं है। यदि आपने स्वनिम विज्ञान (Phonetics) में कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं लिया है तो आपको 100 स्वतंत्र ध्वनियों का उत्पादन करना भी कठिन लगेगा (यहाँ हम 100 अलग-अलग, स्वतंत्र ध्वनियों के बारे में बात कर रहे हैं एक से अधिक ध्वनि टुकड़ों के मेल से बने शब्द, यानी क्रम से व्यवस्थित ध्वनियों के बारे में नहीं) वास्तव में हरेक इन्सानी भाषा बहुत ही सीमित ध्वनियों का उपयोग करती है। चलिए अँग्रेज़ी व हिन्दी के कुछ उदाहरण देखते हैं- एक शब्द Pat देखें (वैसे तो आज की अँग्रेज़ी में आपको दो वर्ण एक ही ध्वनि को निरूपित करते मिल जाएँगें जैसे cat व kite जहाँ c और k क्रमशः एक ही ध्वनि (क) हैं। अतः इस मामले में अँग्रेज़ी थोड़ी कम विश्वसनीय है) लेकिन Pat की वर्तनी ऐसी नहीं है। इसमें तीन अलग-अलग ध्वनियाँ हैं, 'प' 'ऍ' व 'ट'। स्वतंत्र ध्वनियों को हम ऐसे दर्शातें हैं \प\, \ऍ\, \ट\। वाणी हेतु प्रयुक्त ये अलग-अलग ध्वनियाँ भाषा के स्वनिम (Phoneme) कहलाती हैं।

अब यदि कोई पूछे कि Pat का क्या मतलब है तो हमें उत्तर देने में कोई परेशानी नहीं होगी लेकिन यदि कोई पूछे कि \प\ अथवा \ऍ\ का क्या मतलब है तो हम उसका कोई अर्थ नहीं बता पाएँगे (सिवाय यह कहने के कि यह एक ध्वनि है जो हम बोलते समय काम में लेते हैं)। ऐसा हो सकता है कि कुछ स्वनिमों का स्वतंत्र अर्थ हो, पर ऐसा होना दुर्लभ है। इसी तरह, अन्य स्वनिमों का भी कोई अर्थ नहीं होता है।

यह बात हिन्दी अथवा अन्य भाषाओं पर भी लागू होती है। उदाहरण के लिए, हिन्दी का यह शब्द देखें – 'कपट'। इसमें पाँच ध्वनियाँ हैं \क\, \अ\, \प\, \अ\, \ट\ (अ ध्वनि क और प में जुड़ी हुई है)। जैसे हमने अँग्रेज़ी उदाहरण में देखा, यहाँ भी कपट का अर्थ हमें मालूम है लेकिन इन ध्वनियों का क्या अर्थ है यह हम नहीं बता सकते।

हालाँकि इन दोनों उदाहरणों में एक बात गौर करने लायक है। वह यह कि अपने आप में अर्थहीन इन स्वनिमों को हम अलग-अलग ढंग से पुनर्व्यवस्थित करके नए-नए शब्द बना सकते हैं, जैसे Pat से Tap, Apt, और At भी।

इसी तरह, हिन्दी की ध्वनियों को पुनर्व्यवस्थित करके हम पटक, टपक, पक, पट, कप इत्यादि शब्द बना सकते हैं और यदि हम इसमें एक ध्वनि और जोड़ दें, जैसे \ई\ तो हमें पटकी, टपकी, कटी, पकी, पटी, की, पी इत्यादि बहुत से और शब्द मिल जाएँगें। इन शब्दों की सूची बनाने का प्रयास रोचक होगा। इसी तरह, अन्य भाषाओं में भी ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएँगे क्योंकि यह खासियत इन्सानी भाषाओं की है न कि हिन्दी और अँग्रेज़ी की। दूसरे शब्दों में, हरेक भाषा में अलग-अलग तरीकों से स्वनिमों को व्यवस्थित करते हुए बहुत बड़ी संख्या में अर्थपूर्ण पद यानी शब्द बनाने की व्यवस्था होती है। सारी इन्सानी भाषाएँ ऐसे ही बनती हैं और इस ढाँचे को ही पैटर्निंग की द्विविधता या संक्षेप में द्विविधता कहते हैं।

द्विविधता का मतलब है सीमित संख्या में उपलब्ध अर्थहीन तत्वों के संयोजीकरण से बहुत ही बड़ी संख्या में अर्थपूर्ण शब्दों का उत्पादन करना। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण ढाँचा है क्योंकि यदि इन्सान के पास ये अर्थहीन ध्वनि इकाइयाँ नहीं होतीं जिनको जोड़कर नए-नए पद (शब्द) बनते हैं, बल्कि ऐसी इकाइयाँ होतीं जिनका अपना स्वतंत्र अर्थ होता, तब हमारे पास शब्दों का इतना बड़ा भण्डार नहीं होता। इस तरह की व्यवस्था का परिणाम यह होता कि ध्वनियों की संख्या और अर्थों की संख्या में कोई अन्तर नहीं होता, हमारे पास उतने ही अर्थ होते जितनी ध्वनियाँ। और जैसा कि ऊपर ज़िक्र किया गया है, आज की सभी भाषाओं को जोड़ दें तो भी हमारे पास 100 से ज़्यादा ध्वनियाँ नहीं हैं, अत: हमारी भाषाओं में 100 से ज़्यादा शब्द नहीं होते। ज़रा सोचिए, हिन्दी में अधिक से अधिक भी केवल 100 ही शब्द होते तो काम कैसे चलता? हम इतने सारे कथन कैसे कह पाते? क्या हम विज्ञान, इतिहास, गणित, मानविकी जैसे विषय बना पाते? क्या हम बच्चों को शेर, दानव, राक्षस, परियों की कहानी सुना पाते? क्या हम भाषा, दर्शन आदि की किताबें लिख पाते? और तो और, क्या हमारे पास इतनी सारी अलग-अलग भाषाएँ होतीं? क्योंकि भाषाओं में कई ध्वनियाँ एक समान हैं लेकिन वे जिस तरह से व्यवस्थित होती हैं, उससे असंख्य नए-नए पद/शब्द बनते हैं।

द्विविधता के सन्दर्भ में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि दुनिया की किसी अन्य प्रजाति की भाषा में यह गुण नहीं होता। यह इन्सानी भाषा की ही अनूठी क्षमता है (हालाँकि पक्षियों और व्हेल मछलियों के गान में द्विविधता का कुछ तत्व होता है पर इन्हें एक मुकम्मल संकेत प्रणाली नहीं कहा जा सकता)। अन्य जानवरों की संकेत प्रणाली में एक ध्वनि का एक ही अर्थ होता है। उदाहरण के लिए, किसी इलाके पर अपना अधिकार जताने की एक ध्वनि, खतरे की सूचना देने की एक ध्वनि, पानी की उपलब्धता या अपनी सन्तान की पहचान बताने की एक अलग ध्वनि। कुछ प्रजातियों में इन ध्वनियों की संख्या तीन से छह के बीच होती है। सबसे ज़्यादा, अमूमन 20 ध्वनियाँ वरवेट प्रजाति के बन्दरों में पाई जाती हैं। इन्सानी भाषा के कुछ अन्य गुण जिनके बारे में आगे हम चर्चा करेंगे, वो इसलिए ही सम्भव हो पाते हैं क्योंकि इन्सानी भाषा में द्विविधता होती है।

अब यदि हम हिन्दी में स्वनिमों की संख्या देखें तो यह 52 है। लेकिन यह संख्या बदल भी सकती है क्योंकि हरेक हिन्दी भाषी बिलकुल एक ही तरह की ध्वनियों का प्रयोग करेगा यह ज़रूरी नहीं है। उदाहरण के लिए, अगर आप 'शक्कर', 'षक्कर' और 'सक्कर' में फर्क करते हों तो इसका अर्थ यह है आपके पास ये तीन अलग-अलग ध्वनियाँ हैं। लेकिन जो लोग यह फर्क नहीं करते उनके पास एक अथवा दो ध्वनियाँ कम हैं। ऐसा हो सकता है कि उनके पास इनके अलावा कुछ अन्य ध्वनियाँ हों। यदि हम श, ष, स इन तीनों ध्वनियों का सहजता से इस्तेमाल कर पाते हैं तो हमें यह लग सकता है कि कई दूसरे लोग इस फर्क को क्यों नहीं देख या महसूस कर पा रहे हैं, जबकि हम यह आसानी से कर पा रहे हैं। लेकिन ऐसा अक्सर होता है, और हमारे साथ भी किन्हीं अन्य ध्वनियों के सन्दर्भ में ऐसा हो सकता है। उदाहरण के लिए कोई संस्कृत बोलने वाला 'ऋतु' और 'रितु' में फर्क कर सकता है लेकिन शायद आज अधिकांश लोग इस फर्क को महसूस नहीं करते। इसी तरह, सम्भव है कोई अँग्रेज़ी बोलने वाला special और spatial में फर्क महसूस करे और कोई दूसरा नहीं करे।

सभी भाषाओं में स्वनिमों की संख्या अलग-अलग होती है। कुछ अफ्रीकी भाषाओं में यह संख्या 100 से भी ऊपर है और कुछ अन्य भाषाओं में केवल 10 (जैसे ब्राज़ीली भाषा पिराहा में केवल 10 ध्वनियाँ हैं – सात व्यंजन और तीन स्वर)। औसतन किसी भी भाषा में यह संख्या लगभग 25 होती है। हिन्दी में यह 52 हैं। लेकिन इन संख्याओं से परे बात करें तो प्रत्येक इन्सानी भाषा पैटर्निंग की द्विविधता के नियम पर निर्मित होती है, एक ऐसा नियम जो इस दुनिया में केवल इन्सानों के ही पास है और यह वह नियम है जिसके बगैर इन्सानी भाषा का ऐसा अस्तित्व ही नहीं होता जैसा आज है।

भाषा के मुख्य गुण को संक्षेप में व्यक्त करें तो इसमें अर्थपूर्ण संवाद होते हैं, जो अर्थपूर्ण वाक्यों से बनते हैं। ये अर्थपूर्ण वाक्य अलग-अलग, छोटी-बड़ी लेकिन अर्थपूर्ण इकाइयों से बने होते हैं (शब्द और रूपिम)। ये अर्थपूर्ण इकाइयाँ अन्य छोटी अर्थहीन इकाइयों (ध्वनि या स्वनिम) से बनी होती हैं। स्वनिमों को अलग-अलग तरह से व्यवस्थित कर हम नए-नए शब्द बना सकते हैं। इन शब्दों को जोड़कर वाक्य बनते हैं। शब्दों से नित नए-नए वाक्य बन सकते

हैं। वाक्यों की मदद से हम एक ही बात को कई तरह से कह सकते हैं। कई भाषाओं में एक वाक्य को कई तरह से लिखने की आज़ादी होती है। इसका अर्थ यह है कि वाक्य के टुकड़ों को नियम-कायदों के तहत अलग-अलग तरह से जोड़कर नए रूप बन सकते हैं। लेकिन शब्द बनाने का काम ध्वनि के टुकड़ों से शुरू होता है। ध्वनि के टुकड़े आपस में जुड़कर शब्दांश (Syllable) बनाते हैं। शब्दांश व रूपिम (Morpheme) से मिलकर शब्द बनते हैं और फिर इनसे बनते हैं वाक्य। इस प्रकार भाषा की रचना को दो स्तरों पर देखा जा सकता है। पहला स्तर अपने आप में अर्थहीन ध्वनियों का है। अगर आप सार्थक संवाद की भाषा के छोटे से छोटे टुकड़े देखें तो पाएँगे कि यह अर्थहीन ध्वनियों के मेल से बना है। इन अर्थहीन ध्वनियों की संख्या सीमित है। पर अपने दूसरे स्तर पर सार्थक टुकड़ों के रूप में निर्मित व्यवस्था के रूप में इसमें असंख्य शब्दावली अथवा रूपिम शामिल हैं। यह गुण सिर्फ इन्सानी भाषा में पाया जाता है। (हालाँकि हाल ही में कुछ खास तरह के बन्दरों की भाषा में इस तरह के ध्वनि संयोजन के कुछेक उदाहरण पाए गए हैं पर यह बहुत कम जोड़े बना सकते हैं)। वैसे इन्सानी भाषाओं के कुछ ध्वनि टुकड़े पूरी तरह अर्थहीन भी नहीं होते। लेकिन ऐसे टुकड़ों व बन्दरों की भाषा में ध्वनि संयोजन दोनों के उदाहरणों की संख्या बहुत कम है। इन्सानी भाषा में शायद ऐसा कोई स्वनिम नहीं है जिसका स्वतंत्र अर्थ हो पर अन्य शब्दों को बनाने में उसका कोई उपयोग नहीं हो। इनमें से कई जिन शब्दों में पाए जाते हैं वे उसकी एक खास झलक दे देते हैं और इसी वजह से हम कई बार शब्द की शुरुआत या मेल को देखकर ही समझ जाते हैं कि शब्द क्या होगा। जैसे अँग्रेज़ी भाषा से ऐसे उदाहरण हैं un, pre, ir और हिन्दी में 'अ', 'सु', 'गैर' ऐसे ही कुछ अन्त में आने वाली ध्वनियाँ भी शब्द के स्वरूप के बारे में बताती हैं। इन सब के आधार पर ऐसा लगता है कि द्विविधता भाषा के विकास व बढ़ती जटिलता के साथ–साथ स्पष्ट होती जाती है। (ऐसा लगता है कि यह द्विविधता कुछ-कुछ उत्पादकता जैसी है लेकिन उत्पादकता में सार्थक टुकड़ों को जोड़कर नए-नए अर्थ गढ़ने के बारे में बात होती है जबकि द्विविधता का सम्बन्ध छोटी-छोटी इकाइयों को अलग-अलग क्रम में जोड़ने से है।)

विस्थापन (Displacement)

विस्थापन का तात्पर्य है कि इन्सान उन चीज़ों के बारे में भी बात कर सकते हैं जो उनके सामने नहीं हैं, इस सन्दर्भ में न तो समय की कोई सीमा है और न ही जगह की। यानी आप उन चीज़ों के बारे में भी बात करने की क्षमता रखते हैं जो कुछ सदियों या वर्षों या महीनों या दिनों पहले या कुछ क्षण पहले हुईं थीं और उनके बारे में भी जो किसी और गाँव, शहर या देश में हुईं थीं।

दूसरे शब्दों में, जो चीज़ें वर्तमान में आपके समक्ष नहीं हैं, न ही आप उन्हें देख पाते हैं या फिर वे चीज़ें जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है, न था और न कभी हो सकता है - इन सभी के बारे में भाषा का उपयोग करते हुए कुछ कह पाना व जो कहा गया उसे समझ पाना ही विस्थापन है। हमें पिछले दिन हुए क्रिकेट मैच के बारे में बात करने में, हज़ारों साल पहले भाषा का विकास कैसे हुआ, मानव जीवन कैसे अस्तित्व में आया, वह कैसे विकसित हुआ,

आज से हज़ार साल बाद क्या-क्या हो सकता है वगैरह के बारे में बात करने में कोई परेशानी नहीं होती। हम किसी भी जगह के सामाजिक, राजनैतिक, प्राकृतिक व सांस्कृतिक जीवन अथवा वहाँ के बारे में किसी भी विषय पर बात कर सकते हैं चाहे हम वहाँ गए हों या नहीं।

वक्ता गुज़रे हुए समय या आने वाले समय के बारे में या फिर अपने सपनों व उम्मीदों के बारे में बात कर सकता है। इन्सानी भाषा केवल वर्तमान के बारे में और जो सामने उपस्थित है उसी के बारे में बात करने तक सीमित नहीं है। विस्थापन इन्सान की भाषा का वह गुण है जो इसे अन्य जानवरों की भाषा से अलग करता है। हालाँकि वानर प्रजाति के जीव कुछ-कुछ मामलों में इसका कुछ हद तक उपयोग कर सकने में सक्षम हैं और हम उन्हें इसके लिए तैयार कर सकते हैं लेकिन यह क्षणिक ही रहता है। इसके अलावा सिर्फ मधुमक्खियों में ऐसा पाया गया है कि एक हद तक वे शहद कहाँ है उसकी जानकारी दूसरी मधुमक्खियों को दे सकती हैं लेकिन बाकी जानवरों के तंत्र में विस्थापन का यह गुण नहीं है।

खुलापन (Openness)

यह वह योग्यता है जिसका उपयोग कर हम कुछ भी कह सकते हैं। इनमें वे बातें भी सम्मिलित हैं जो हमने न कभी पहले कही हैं और न कभी सुनी हैं। उदाहरण के लिए –

- सम्भव है 25 फरवरी 2029 को महात्मा गाँधी शिमला जाएँगे।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी कहानियाँ मेवाड़ी में लिखी थीं और बाद में वे बांग्ला में अनुदित की गईं।
- कल जब मैं ऑटो में जा रहा था, मैंने देखा दो गायें हवाई जहाज़ के साथ उड़ रही थीं।
- आज 30 जनवरी 2048 को गाँधी का पुर्नजन्म मानेंगे।

आपने ऐसे वाक्य पहले सुने हों यह लगभग असम्भव है लेकिन इन वाक्यों को समझने में आपको कोई परेशानी नहीं हुई होगी। यहाँ तक कि यदि आप इनमें विश्वास नहीं करते हैं तब भी इसी तरह आपको एकदम नए, पहले कभी न सुने वाक्यों को बनाने में भी कोई परेशानी नहीं होगी। वास्तव में हम रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में जो बातें करते हैं वे बिलकुल नई होती हैं और ऐसा बिलकुल हो सकता है कि वे बातें पहले कभी किसी ने नहीं कही हो। अगर आप समाचार पत्रों, कहानियों, नज़्मों, गज़लों, कविताओं के बारे में सोचेंगे तो आपको यह समझने में और मदद मिलेगी।

ये दोनों बातें, पहली यह कि जो चीज़ें समय व जगह की सीमा के बाहर हैं उनके बारे में बात कर पाना (विस्थापन) और दूसरी यह कि बिलकुल नए उद्गारों का निर्माण करने व उनको समझने की हमारी योग्यता (खुलापन), यह दोनों हम इतनी सहजता से करते हैं कि हमें इनके बारे में ठहरकर सोचने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। लेकिन ये अनूठी हैं और जीवन

के लिए बेहद महत्वपूर्ण। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आप केवल उन चीज़ों के बारे में ही बात कर पाएँ जो आपके सामने हैं, किसी और चीज़ के बारे में नहीं? और क्या आप सोच सकते हैं कि आपके पास कुछ सीमित उद्‌गारों की ही सूची हो और जब भी आप मुँह खोलें आप अपनी सूची में से एक उद्‌गार चुनें और बोलें? भाषा की हमारी अब तक की जो समझ है उससे इस तरह की भाषा बहुत दूर होगी। लेकिन जानवरों का सम्प्रेषण तंत्र कुछ ऐसा ही है।

खुलापन नए वाक्य व संदेश गढ़ने व व्यक्त करने की सम्भावना देता है और यह द्विविधता के कारण है। हर बार नया व अलग ध्वनि टुकड़ा बनाने की ज़रूरत नहीं। इस खुलेपन के बिना हम इन्सान भी अन्य जानवरों की तरह तत्काल यानी उसी समय और स्थान व काल की सीमा में बँधकर ही संदेशों का आदान-प्रदान कर पाते। हमें अभी संवाद के लिए कोई बाहरी उत्प्रेरक नहीं चाहिए। अन्य जीवों के लिए यह आवश्यक है और उनके सभी सन्देश उसी समय, काल व परिस्थिति में बँधे होते हैं। (हालाँकि मधुमक्खी का नाच रस के स्थान से कुछ दूर पर होता है। पर यह भी खास सन्दर्भ में व खास अर्थ के लिए है और उसी दायरे में बँधा है।)

प्रसारण और दिशात्मक अभिग्रहण (Broadcast Transmission and Directional Reception)

जब इन्सान (अथवा जानवर) बोलते हैं तब ध्वनियाँ हर दिशा में प्रसारित होती हैं। और अक्सर सुनने वाले को पता भी चल जाता है कि आवाज़/आवाज़ें किस दिशा से आ रही हैं। अधिकांश भाषाओं में, चाहे वह इन्सानी हो या जानवरों की, यह गुण होता है कि बोली गई ध्वनियाँ दूर-दूर तक और हर दिशा में प्रसारित होती हैं। यानी संदेश ग्रहण करने वाले का आँखों के दायरे में होना ज़रूरी नहीं है। सांकेतिक भाषा के उपयोग करने में यह नहीं हो सकता। इसका उपयोग कुछ फर्क होता है, सांकेतिक भाषा का उपयोग करते वक्त ज़रूरी होता है कि संकेत देने वाला और संकेत लेने वाला दोनों एक-दूसरे को देख सके। संकेत उन्हीं को प्रसारित किए जा सकते हैं, जिनकी निगाहें संकेत देने वालों की दृष्टि रेखा में हैं यानी वे उनसे छिपे नहीं रह सकते हैं। यदि छिपे रहेंगे तो कोई संकेतों को देख ही नहीं सकेगा और नतीजतन समझ भी नहीं सकेगा।

क्षणिकता (Transitoryness)

क्षणिकता भाषाई संकेतों के अस्थाईपन को बताती है। यानी जल्दी से लुप्त होना अथवा धुँधला हो जाना। यह गुण बोली गई भाषा पर ही लागू होता है और उसके अस्थाई व अल्पकालिक होने के बारे में बताता है। गौरतलब है कि भाषा बोले गए ध्वनि संकेतों के रूप में ही होती है और बोली गई ध्वनियाँ अल्प समय के लिए ही रहती हैं। ध्वनि की तरंगें चारों तरफ फैलती हैं और जल्दी ही गायब हो जाती हैं। कुछ समय के बाद उन्हें फिर से सुना नहीं जा सकता। जब वक्ता बोलना बन्द कर देता है तो ध्वनियाँ भी सुनाई नहीं देतीं। हाथों, चेहरे, शरीर के अन्य अंगों से दिए गए संकेतों (सांकेतिक भाषा) पर भी यही बात लागू होती है। सम्प्रेषण के कुछ अन्य रूप, उदाहरण के लिए, लिखना अथवा टाइप करना ज़्यादा स्थाई हैं।

हालाँकि अब ध्वनि संकेतों को रिकॉर्ड करके संजोना सम्भव है किन्तु पहले यह सम्भव नहीं था। वैसे रिकॉर्ड किए संकेत को समझना तब तक सम्भव नहीं होगा जब तक उसे बजाकर सुना नहीं जाए और बजाने पर जो ध्वनि निकलती है वह भी क्षणिक ही होती है।

विनिमेयता (Interchangeability)

विनिमेयता का मतलब है कि इन्सान भाषिक संकेत दे सकता है और प्राप्त भी कर सकता है। ज़ाहिर है कि (वक्ता और श्रोता के लिए) यह संकेत एक जैसे होने चाहिए ताकि एक-दूसरे द्वारा दिए गए संकेतों को समझा जा सके। यानी उनका अर्थ भेजने वाले के लिए भी वही होना चाहिए जो पाने वाले के लिए है। वे (वक्ता और श्रोता) ऐसे विभिन्न अभिप्राय वाले अनगिनत संकेतों को गढ़ सकते हैं, सम्प्रेषित कर सकते हैं व ग्रहण करके समझ सकते हैं। विनिमेयता भी हर भाषा का गुण है। हालाँकि अन्य डिज़ाइन फीचर्स के कारण इन्सानी भाषा में विनिमेयता काफी महत्वपूर्ण है। इस कारण भाषा में कोई दूसरे व्यक्ति की ओर से संदेश दे सकता है। उदाहरण के लिए, कोई यह कह सकता है कि "मैं लड़का हूँ" जबकि वह एक लड़की है या फिर यह कि "मैं कंप्यूटर हूँ" जबकि वह एक इन्सान है। यह किसी नाटक के पात्र का अभिनय करते हुए अथवा खेल-खेल में भी हो सकता है अथवा हरकारे की भूमिका में भी। यह झूठा वाक्य नहीं है क्योंकि सब समझते हैं कि वक्ता किसी भी तरह के कथन गढ़ सकता है, चाहे वह कथन वक्ता अथवा श्रोता से सम्बन्धित हो या ना हो। महत्वपूर्ण यह है कि उसका अर्थ वक्ता व श्रोता के लिए एक ही है। व्यक्ति वही सुनकर समझता है जो बात वह बोल भी सकता है चाहे वह किसी और की तरफ से या किसी और के बारे में हो। यह गुण अन्य प्रजातियों की भाषा में नहीं पाया जाता। उदाहरण के लिए, रानी चींटी अपने पद व हैसियत (Status) बताने के लिए एक तरह के गन्ध का स्त्राव करती है। यह संकेत कोई अन्य चींटी उनकी ओर से नहीं दे सकती।

पूर्ण फीडबैक (Total Feedback)

भाषा बोलने वाले अपनी आवाज़ खुद भी सुन सकते हैं और जो वे कह रहे हैं उसे कहते-कहते भी संशोधित व नियंत्रित कर सकते हैं। इसी प्रकार सांकेतिक भाषा को उपयोग करने वाले अपने संकेतों को देख सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं और उन्हें नियंत्रित कर सकते हैं। यह गुण सन्देश को व्यवस्थित व नियंत्रित करने के लिए ज़रूरी है।

विशिष्टीकरण (Specialisation)

भाषाई संकेतों का प्राथमिक उद्‌देश्य भाषाई सम्प्रेषण है न कि सिर्फ किसी जैविक कार्य का सम्पादन। जब इन्सान बोलते हैं अथवा सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हैं तो सामान्यतः यह इरादतन होता है। भाषाई संकेतों के लिए शरीर में अंगों का भी विशेष तौर से विकास होता है।

विशिष्टीकरण का गुण जानवरों की भाषा में भी है किन्तु इसका दायरा बहुत सीमित है। विशिष्टीकरण अर्थपूर्णता से जुड़ा है। भाषा में ऐसे संकेत उपयोग किए जाते हैं जिनसे

अर्थपूर्ण सन्देश दिए व लिए जा सकते हैं। ये संकेत, सन्देश के मसौदे से भी सम्बन्धित हो सकते हैं पर ये उससे बिलकुल अलग मनमाने मान्य संकेत भी हो सकते हैं। इन्सानी भाषा में अलग-अलग पर विशिष्ट संकेत बनाने की असीमित क्षमता है और इसीलिए इन्सान असंख्य सन्देश गढ़ सकता है।

गैर-विशिष्ट सम्प्रेषण का एक उदाहरण कुत्ते के हाँफने का है, कुत्ते का हाँफना यह बताता है कि वे प्यासे हैं अथवा उन्हें गर्मी लग रही है या वे थके हुए हैं। लेकिन हाँफना इसलिए होता है क्योंकि इस प्रकार कुत्ते अपने शरीर का तापमान सन्तुलित करते हैं। यहाँ सम्प्रेषण गौण है, प्राथमिक तौर पर यह एक जैविक प्रक्रिया है। कुत्ते मौसम का विवरण देने के लिए नहीं हाँफते और न ही किसी का हाल-चाल पूछने के लिए।

अर्थवत्ता (Semanticity)

दुनिया को व उसमें मौजूद चीजों को अर्थ देने, उनका अर्थ अभिव्यक्त करने के लिए ध्वनियों के क्रम के पास उपलब्ध सामर्थ्य को अर्थवत्ता कहते हैं। कुछ ध्वनियाँ सीधे-सीधे कुछ अर्थों से जुड़ी होती हैं जैसे हिन्दी में 'आ' और 'ए'। लेकिन अनेक ध्वनि संकेत तभी अर्थपूर्ण होते हैं जब वे समूह में हों जैसे 'कमल' या 'काका'। यानी आप जब ध्वनियों को एक खास क्रम में रख देते हैं तो वे अर्थ को सम्प्रेषित करने का काम करती है और ऐसा अर्थवत्ता की वजह से हो पाता है। मसलन, तरबूज दो ध्वनि जोड़ों से बना है, पर इसकी ध्वनियों – त, र, बू, ज को किसी और क्रम में जोड़ने से बात नहीं बनती है – जैसे, जरबूत, या बूजतर, या बूरतज आदि।

मनमानापन (Arbitrariness)

उपयोग किए गए ध्वनि टुकड़ों, किसी ध्वनिरूप और उसके अर्थ में कोई अन्तर्निहित व तार्किक सम्बन्ध नहीं होता है। इन्सानी भाषा किसी वस्तु अथवा विचार को कोई भी नाम दे देती है, वह नाम मनमाना होता है। उदाहरण के लिए 'बिल्ली' शब्द में बिल्ली के गुण दिखाने वाला कुछ भी नहीं है। अंग्रेज़ी का Cat शब्द भी इसी बिल्ली को दिखाता है। किसी तीसरी भाषा को बोलने व समझने वाला बिल्ली अथवा Cat शब्द को इस नाम के जानवर की छवि से नहीं जोड़ सकता क्योंकि वह इसी जानवर को किसी तीसरे नाम से पहचानता है। इसी तरह गिलहरी के लिए 'गिलहरी' शब्द ही क्यों चुना इसका भी कोई तर्क नहीं है। गिलहरी शब्द बड़ा है लेकिन गिलहरी बड़े आकार के जानवरों, मसलन, शेर, हाथी, कुत्ते वगैरह से छोटी होती है। यह बात तब भी दिखाई पड़ती है जब एक ही अवधारणा के लिए अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग शब्द होते हैं जैसे हाथी के लिए मराठी में शब्द है हत्ती, संस्कृत में गज, अँग्रेज़ी में एलिफेंट, अरबी व तुर्की में फील और रूसी में स्लोन और हाथी के लिए प्रयोग किए जाने वाले ये अलग-अलग शब्द उस भाषा विशेष को जानने वाले सभी लोग जानते, समझते व उपयोग करते हैं।

सांकेतिक भाषाओं में विचारों का आदान-प्रदान देखकर होता है और इसी वजह से इनमें प्रतीकात्मकता (Iconicity) होती है। प्रतीकात्मकता की वजह से ये संकेत सीमित अर्थों का ही सम्प्रेषण कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिकन संकेत भाषा में 'घर' को बताने के लिए हाथों को कुछ इस तरह मोड़ा जाता है कि उसे देखकर घर की छत व दीवारों का आभास होता है। हालाँकि ऐसी भाषाओं में भी बहुत-से संकेत प्रतीकात्मक नहीं होते हैं और इनके रूप व अर्थ के बीच का सम्बन्ध मनमाना ही होता है। कुल मिलाकर, प्रतीकात्मक संकेतों में मनमानेपन का आधार व स्वरूप फर्क होता है व इसमें चित्ररूपी रचना का उपयोग होता है। गौरतलब है कि भाषा के व्यापक होने की सम्भावना बोली व सुनी गई भाषा के चलते बढ़ती जाती है।

पृथकता (Discreteness)

भाषाई निरूपण को छोटी-छोटी पृथक इकाइयों में तोड़ा जा सकता है और ये एक-दूसरे से नियमबद्ध तरीके से जुड़ सकती हैं। पहले से स्थापित वर्गों/ श्रेणियों के आधार पर इन इकाइयों को स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है कि कौन सी इकाइयाँ हैं - उदाहरण के लिए, अँग्रेज़ी में वचन को दर्शाने के लिए रूपिम /s/ जोड़ दिया जाता है जो कई संज्ञाओं के अन्त में जुड़ सकता है। यह रूपिम /s/ वर्ग के आधार पर पहचाना जा सकता है जैसे कि bus में /s/ बहुवचन नहीं बता रहा, यहाँ यह शब्द का हिस्सा है, लेकिन cats में यह एक व्याकरणिक इकाई है और यह बहुवचन की श्रेणी को इंगित करती है। यानी अँग्रेज़ी में 'स' की ध्वनि के अलग-अलग प्रकार हैं और ये इस प्रकार हैं – पहली वह 'स' ध्वनि जो शब्दों के बहुवचन बनाती है जैसे कि caps, bats, chalks में; दूसरी वह 'स' ध्वनि जो बताती है कि शब्द तृतीय पुरुष, एक वचन और वर्तमान काल है जैसे कि walks, talks, swims इत्यादि में; और तीसरी वह 'स' ध्वनि जो शब्द का हिस्सा है जैसे कि bus, yes, fuss, guess में। यदि हिन्दी के उदाहरण देखें तो 'सलाइयाँ', 'इकाइयाँ', 'पकौड़ियाँ' इत्यादि के अन्त में आने वाली 'याँ' ध्वनि का अलग अर्थ होता है कि शब्द बहुवचन रूप में हैं, लेकिन आशियाँ, मियाँ आदि में यह ध्वनि शब्द का हिस्सा है। इसी तरह 'चलता', 'भागता', 'गाता', 'उठता' के बाद लगी 'ता' ध्वनि बताती है कि ये क्रिया शब्द तृतीय पुरुष, एकवचन, पुल्लिंग और वर्तमान काल में हैं। लेकिन यह ध्वनि पपीता, माता, पिता जैसे शब्दों की 'ता' ध्वनि से अलग है, ये टुकड़े संज्ञा व क्रिया के वर्ग को दर्शाते हैं।

उत्पादकता (Productivity)

उत्पादकता का मतलब है कि भाषा का उपयोग करने वाले नए शब्दों को गढ़ सकते हैं और उन्हें समझ सकते हैं। इन्सानों में असीमित शब्दों, वाक्यों को गढ़ने की क्षमता होती है। व्याकरणिक पैटर्निंग (Grammatical Patterning) की अवधारणा भी उत्पादकता के विचार से जुड़ी हुई है जो भाषा के उपयोग और उसकी समझ को सहज बनाती है। भाषा लगातार परिवर्तित होती रहती है। नए-नए शब्द, वाक्य हर समय गढ़े जाते हैं और शब्दों व संकेतों के अर्थ सन्दर्भ

व परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। यहाँ कई तरह की उत्पादकता की बात हो रही है। पहला, नियमों के आधार पर थोड़ा-सा सीखकर बहुत से नए वाक्य गढ़ पाना; दूसरा, नियमों के ही आधार पर अन्य भाषाओं से शब्द लेकर उन्हें अपनी भाषा के नियमानुसार व्यवस्थित करना और अपनी भाषा में शामिल करना; तीसरा, नए विचार, नई वस्तु, व नई क्रिया के बारे में कल्पना करना या ढूँढना और फिर उसे नया नाम देना अथवा उसके लिए नया शब्द गढ़ना। इस तरह बाद में वाक्य व संवाद के स्तर पर विशाल उत्पादकता सम्भव हो पाती है। यह हर पल नए वक्तव्यों व संकेतों के रूप में निर्मित होती है। बेशुमार उत्पादकता के लिए द्विविधता (Duality) और खुलापन (Openness) दोनों आवश्यक हैं।

परम्परागत हस्तान्तरण (Traditional Transmission)

इसे सांस्कृतिक हस्तान्तरण भी कहा जाता है। हालाँकि इन्सानों में भाषा की क्षमता जन्मजात होती है लेकिन भाषाएँ जन्म के बाद एक सामाजिक वातावरण में सीखी जाती हैं। बच्चे भाषा का उपयोग करने वाले लोगों से बातचीत करते हुए बोलना सीखते हैं। भाषा व संस्कृति एक-दूसरे से गहरे गुंथे हुए होते हैं। इन्सानी भाषा स्पष्ट रूप से परम्परागत संस्कृति से अनुक्रिया करके ही हस्तान्तरित होती है। अन्य जीवों की भाषाओं के काफी सीमित होने के कारण उनमें इस प्रकार के हस्तान्तरण की ज़रूरत नहीं है। इस पहलू पर यह विवाद भी है कि पशुओं की भाषा का यह सीमित हस्तान्तरण सामाजिक है अथवा जैविक। यानी मधुमक्खी क्या दूसरों को देखकर नाच द्वारा संकेत देना सीखती है अथवा वह जन्म से ही यह नाच जानती है? यही बात पक्षियों के गान पर भी लागू होती है। इन्सानी समाज में भाषा सीखना सांस्कृतिक/सामाजिक अन्त:क्रिया का हिस्सा ही है व इसी सांस्कृतिक सामाजिक अन्त:क्रिया के कारण सभी बच्चे अपनी भाषा सीख पाते हैं। वे वही भाषा सीखते हैं जो उस समाज में बोली जाती है जिसमें वे बड़े होते हैं।

वाक् छल (Prevarication)

वाक् छल, झूठ बोलने या धोखा देने को कहते है। भाषा का उपयोग करते हुए इन्सान झूठे और अर्थहीन कथन भी कह/बना सकता है। यह एक गुण है जो होकेट ने अपनी सूची में बाद में जोड़ा। यह विस्थापन व खुलेपन से जुड़ा भी है किन्तु कुछ मायनों में उससे अलग भी है। यह बताता है कि 'बोलने' वाला (सन्देश देने वाला) जान-बूझकर ऐसे सन्देश दे सकता है जो गलत अथवा झूठ है। वह ऐसे कथन भी बना सकता है जिनके बारे में उसे पता नहीं। और फिर वह भाषा के नियमों का उपयोग कर अर्थहीन वाक्य भी बना सकता है जिन्हें कोई समझ नहीं सकता, हालाँकि वह वाक्य व्याकरणिक दृष्टि में हर प्रकार से उसी भाषा के लगते हैं। इन्सान की भाषा का यह गुण सामाजिक व सांस्कृतिक स्तर पर महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि इन्सान अन्य जन्तुओं से अलग है। वह भाषा व संदेशों में काल व परिस्थिति के साथ-साथ यथार्थ को भी अलग कर सकता है। इसमें कल्पना व सपने भी शामिल हैं और छल व ठगी भी। इस क्षमता का उपयोग कर वह तरह-तरह के छल कर सकता है। छोटे बच्चे भी तीन–चार साल की उम्र तक आते-आते इस तरह के छल करना शुरू कर देते हैं। वह

इस बारे में तो झूठ बोलते हैं कि क्या हुआ व उन्होंने क्या किया किन्तु वह अपनी भावनाओं के बारे में झूठ नहीं बोल सकते। दस साल तक आते-आते उनका झूठ पक जाता है और वे लोगों को ठगना, बहाने बनाना व झूठ बोलना अच्छी तरह से सीख जाते हैं।

वयस्क तरह-तरह से और तरह-तरह के लक्ष्यों के लिए झूठ बोलते हैं। लोगों को पीड़ा से बचाने के लिए, सामाजिक सम्बन्धों को बनाए रखने के लिए, पद की चाह में, अपने आप को बचाने के लिए, अपने हिस्से से अधिक पाने के लिए व अन्य बहुत-सी परिस्थितियों में व कारणों से झूठ बोलते हैं। इस तरह की झूठ बोलने की ताकत के बारे में कई विरोधाभासी विचार हो सकते हैं। एक डॉक्टर मरीज़ को दिलासा देने के लिए व उसकी लड़ने की शक्ति बनाए रखने के लिए झूठी उम्मीद देता है, एक शिकारी उसके शिकार को शिकार का सही स्थान नहीं बताकर उसे उलटी दिशा में भेज देता है, एक व्यक्ति जो निराशा की हालत में है उसे उत्साहित करने के लिए अर्ध सत्य बोलना आदि। इसके साथ ही वकालत के पेशे के साथ जुड़े सवाल हैं कि क्या वह पेशा ही जायज़ है।

बहरहाल इन्सान की भाषा की यह ताकत उसे रूमानी तारीफ गढ़ने, आदर्श व्यक्तित्व रचने, काल्पनिक यूटोपिया व नरक रचने की क्षमता भी देती है। इसी गुण का एक रूप बहुअर्थता है। यह जानबूझकर व अनजाने में दोनों तरह से किया जाता है। शब्दों व उनके समूहों से खेलते समय इस ताकत का बहुत उपयोग होता है। साहित्य, कल्पना, कटाक्ष, दर्शन के कथनों में इस सन्दर्भ-निर्धारित बहुअर्थता का काफी उपयोग किया जाता है।

आत्मचेतना (Reflexiveness)

इन्सान खुद भाषा के बारे में बात करने के लिए भी भाषा का उपयोग कर सकते हैं और करते भी हैं। आत्मचेतना का अर्थ है खुद के ऊपर ही कार्य करना। इन्सान की भाषा आत्मचेतन है, यानी वह स्वयं के बारे में भी चर्चा कर सकती है। जैसे हम यहाँ इस लेख में कर रहे हैं, भाषा की मदद से भाषा के बारे में बातचीत। पशु अपनी भाषा में अपने बारे में अथवा अपनी व दूसरों की भाषा के बारे में बात नहीं कर सकते पर इन्सान कर सकते हैं। भाषा की मदद से, भाषा के बारे में सोच पाना इन्सान व भाषा की प्रकृति पर भी असर डालता है। अपने बारे में सोच पाना, बात कर पाना और अपने निर्णयों, भावनाओं, विचारों, धारणाओं, मान्यताओं, समझ आदि के बारे में चर्चा करने व विचार कर पाने से इन्सान खुद को नियंत्रित व परिवर्तित भी कर सकता है।

सीखने योग्य (Learnability)

भाषा सीखी व सिखाई जा सकती है। जैसे बोलने वाला अपनी पहली भाषा सीखता है, वैसे ही वह अन्य भाषाओं को सीखने की भी क्षमता रखता है। यह चिन्हांकित करना महत्वपूर्ण है कि छोटे बच्चे सहजता व दक्षता के साथ भाषा सीख जाते हैं। हालाँकि कुछ शोध ऐसा कहते हैं कि भाषा सीखने के लिए एक खास अवस्था महत्वपूर्ण होती है और यदि बच्चे उस उम्र

को पार कर लेते है तो उसके बाद भाषा सीखना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। इसके बावजूद, इन्सान किसी भी उम्र में एक भाषा सीखने के बाद दूसरी भाषाएँ सीख सकते हैं।

पुनरावर्तिता (Recursiveness)

पुनरावर्तिता का अर्थ है इकाइयों को वैसे का वैसा दोहराना। जैसे दो समतल दर्पण जब आमने-सामने रखे जाते हैं तो उसमें छवि के बाद छवियों की छवियाँ दिखाई देती हैं। और अगर यह दर्पण समान्तर हों तो इन छवियों का अनन्त पुनरावर्तन होता है। इन्सानी भाषा में पुनरावर्तिता की इजाज़त है। यानी इसके उत्पादकता के नियमों में कुछ टुकड़ों को दोहराया जा सकता है। इसमें एक जैसी इकाइयाँ एक-दूसरे में सम्मिलित पाई जाती हैं। ऐसा नहीं है कि दूसरे जानवर एक जैसी ध्वनियों को अथवा एक ध्वनियों के क्रम को बार-बार दोहरा नहीं सकते। उदाहरण के लिए, एक चीता बिना पुनरावर्तिता के एक ही पुकार को बार-बार दे सकता है। इसी तरह, गीत गाने वाले कुछ पक्षी भी एक जटिल पद को दोहरा सकते हैं। लेकिन इस सरल जुड़ाव और दोहराव से इन्सानी पुनरावर्तिता को जो चीज़ अलग करती है वह है संरचना (वाक्य) का अपनी ही तरह की एक अन्य संरचना में अन्त:स्थापित होना।

इसके कुछ सरल उदाहरण है: 'वह मेरे दादा के दादा के दादा के दादा के दादा के दादा के ज़माने का है', या 'वह जो मेरा सम्बन्धी है वह मेरे दादा के दादा के.. दादा का पड़पोता है'। फिर कुछ ऐसे भी उदाहरण हैं अँग्रेज़ी जैसी भाषाओं में anti– anti anti anti anti- war या सिर्फ anti anti। साहित्य में भी ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जैसे, "he can take a letter from you to her and then one from her to you and then one from you to her and then one..." (PG Wodehouse, Thank you Jeeves, 1934)।

ऐसे ही हम असंख्य और वाक्य भी गढ़ सकते हैं। जैसे – 'वह जब मेरे यहाँ से लौटा तो हमारा एक-दूसरे को पहुँचा के आना बहुत मज़ेदार लगा और फिर मैं उसे छोड़ने, वह मुझे छोड़ने, फिर मैं उसे, वह मुझे छोड़ने...' ऐसे होते रहने से वार्तालाप चलता ही रह सकता है। ऐसे ही अन्य तरह के उदाहरण, 'यह महत्वपूर्ण नहीं कि वह व्यक्ति एक महत्वपूर्ण इन्सान, बहुत महत्वपूर्ण हस्ती, घर पर रहने वाली कोई स्त्री, उसकी बहन, उसकी पत्नी, कोई कार्यकर्ता, एक सहकर्मी, एक समकक्ष, अफसर, होशियार, नालायक, बेवकूफ, सुन्दर, बदसूरत, उसकी माँ या कोई और थी, उसका वहाँ होना ही राम को अच्छा लगता था'।

इससे मिलते-जुलते कुछ और उदाहरण, 'चीता एक बड़ा, खूँखार, तेज़ धावक, चालाक मांसाहारी है', 'उसकी कलम, लम्बी, लाल, नुकीली, भड़कीली, महंगी किन्तु कमज़ोर थी'। हम देखते हैं कि यहाँ एक ही संज्ञा के लिए बहुत से विशेषण हैं। और इसमें और भी विशेषण जोड़े जा सकते हैं।

यह सभी अलग-अलग तरह की पुनरावर्तिता के उदाहरण हैं। इसी तरह से इन्सानी भाषा में वाक्यों के अन्दर अन्य सार्थक वाक्य जुड़ते जा सकते हैं। जैसे, 'मोहन सोचता है कि रानी मानती है कि रोशनी ने गिलास तोड़ा', या 'मोहन जो दिल्ली के दरियागंज से, मुम्बई के

चौरंगी इलाके के घर, 112 में पाँच साल से रह रहा है वह एक अच्छा आदमी है'। इस प्रकार पुनरावर्तिता भाषा के सभी हिस्सों की समृद्धता व विवरण क्षमता को बढ़ाती है। पुनरावर्तिता उसी ध्वनि अथवा शब्द को बार-बार दोहराना नहीं है। बल्कि इससे अर्थ की गहनता व मात्रा दोनों ही बदल जाते हैं।

ढाँचों से बना ढाँचा

इन्सानी भाषा को ढाँचों से बना ढाँचा भी कहा जाता है। इसका कारण यह है कि इस ढाँचे की रचना में कई ढाँचे सम्मिलित होते हैं और ये सभी ढाँचे अपने आप में नियमबद्ध हैं। ये ढाँचे स्वतंत्र रूप से अपने नियमों से बँधे हैं और कुछ नियमों के अन्तर्गत एक-दूसरे के अन्दर शामिल हैं। भाषाएँ ध्वनि के स्तर पर व्यवस्थित हैं यानी हर भाषा की व्यंजन व स्वर ध्वनियों व उनके जुड़ने के नियम हैं। इनमें से कुछ नियम सभी भाषाओं में पाए जाते हैं। ये ध्वनियाँ कुछ सहज उच्चारण योग्य टुकड़ों के रूप में होती हैं। इन ध्वनियों के जुड़ने के तरीकों में भी कुछ सामान्य नियम हैं। इनकी बात हम यहाँ नहीं करेंगे। हालाँकि एक नियम यह है कि सामान्यत: ये टुकड़े व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर .... के क्रमागत पैटर्न में मिलते हैं और बहुत-से व्यंजन एक साथ क्रम में नहीं बोले जाते। इन ध्वनि के टुकड़ों को मिलाकर कुछ ऐसी ध्वनि बनती है जिसके साथ अर्थ जुड़ा हुआ है। इन्हें शब्द कहते हैं। शब्दों की रचना के लिए अपना ढाँचा है। यह ढाँचा भी पूरी तरह नियमों से बँधा है। जैसे 'चल' अगर एक क्रिया है और 'खा' एक दूसरी क्रिया। ऐसे में 'चल' से 'चलता', 'चलती', 'चले', 'चलो', 'चला', 'चलेगा' आदि सभी रूप सामने आते हैं। ऐसा ही 'खा' के साथ भी होगा, और यही नहीं 'गा', 'पी', 'नाच' क्रियाओं के साथ भी। यानी जब भी कोई नई क्रिया मिलेगी, मान लीजिए 'चाप' नाम की कोई क्रिया है, तो उसके लिए भी ऐसे ही नए शब्द होंगे – चापता, चापती, चापे, चापो...। इसी तरह संज्ञा के रूपों को भी बनाया जा सकता है। यह तो शब्द के स्तर पर व्यवस्था की सम्भावना व रूपों की मात्र झलक ही है।

शब्दों के बाद ढाँचा वाक्यों के स्तर पर संयोजित है। हर वाक्य में शब्दों का जमाव नियमबद्ध ढंग से होता है। इस संयोजन के भी नियम होते हैं जिनमें से कुछ नियम हर इन्सानी भाषा में पाए जाते हैं। इस संरचना के कारण ही सुनाने वाला या पढ़ने वाला वक्तव्य के अर्थ को समझकर औरों से बाँट पाता है। वाक्य बनाने के नियम हर भाषा में हैं।

जैसा कि हम जानते हैं, किसी भी भाषा के अलग-अलग श्रेणी से चुने हुए पाँच-छह शब्द लेकर बहुत-से वाक्य बन सकते हैं। इनको हम हर तरह से अलग-अलग क्रम में जोड़ तो सकते हैं, किन्तु इन्हें जोड़ने के व्याकरणिक नियम भी हैं। अत: हर अलग क्रम मान्य नहीं है। अँग्रेज़ी में क्रियापद वाक्य में कर्ता व कर्म के बीच में ही आ सकता है। अन्य क्रम मान्य नहीं हैं। लेकिन अर्थपूर्ण शब्दों से बने सभी वाक्य इन्सान के लिए सार्थक नहीं होते हैं चाहे वे नियमों के अनुसार ही क्यों न हों। इसी तरह, ध्वनियों को जोड़कर बने बहुत-से शब्द बोलने में तो सरल, सुगम व मोहक हो सकते हैं किन्तु ऐसे सभी शब्दों के लिए हमारे पास अर्थ नहीं हैं। संक्षेप में, इन सबको देखें तो हम पाते हैं कि ध्वनि की इकाइयों के संगठन के लिए एक

व्यवस्था हर भाषा में होती है और ध्वनियों के टुकड़ों को शब्दों के रूप में संगठित करने हेतु एक और व्यवस्थित ढाँचा है। और फिर शब्दों को वाक्यों के रूप में जमाने के लिए एक और व्यवस्थित ढाँचा है।

इसके बाद वाक्यों को भी क्रम में जमाना होता है ताकि सन्देश समझ में आए। इसे विमर्श (Discourse) के स्तर की व्यवस्था कहते हैं। इसके कुछ नियम तो सरल हैं पर कुछ अधिक सूक्ष्म व विशिष्ट नियम हैं जो लोगों को समझने में सरल व बेहतर पाठ देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक पाठ में आगरा व ताजमहल के बारे में चर्चा है तो आगरा के वाक्य के बाद आने वाले वाक्य में आया 'वहाँ पर' का टुकड़ा आगरा शहर से सन्दर्भित होगा न कि किसी मिठाई से।

भाषा का ढाँचा

संवाद का स्तर - वाक्यों में दिया गया विचार; वाक्यों की क्रमबद्धता; वाक्यों में पारस्परिक सम्बन्ध।
वाक्य का स्तर – शब्दों के जमाव का ढंग व उनके नियम; नकारात्मक वाक्यों, प्रश्नवाचक वाक्यों, आदर सूचक आदि वाक्यों का क्रम।
शब्दों का स्तर – शब्दों के शुरू में व अन्त में लगाने वाले शब्दों का पैटर्न, जैसे बहुवचन बनाने, क्रिया रूप परिवर्तन - गा, गाता, गायेगा।
ध्वनि का स्तर – अलग अलग ध्वनियों का होना स्वर व व्यंजन, ध्वनियों की व्यवस्था व्यंजन स्वर व्यंजन स्वर इत्यादि।

कुछ परिभाषाएँ

शब्दांश (Syllable) – उच्चारण की वह इकाई जिसमें कोई स्वर ध्वनि भी होती है। यह स्वर इकाई व्यंजन ध्वनि द्वारा घिरी हुई हो भी सकती है अथवा नहीं भी। सिलेबल किसी शब्द के हिस्से भी हो सकते हैं और कभी-कभी पूरा शब्द भी। उदाहरण के लिए, 'पानी' में एक सिलेबल 'पा' है और दूसरा 'नी'। ये दोनों शब्द के हिस्से हैं। 'पानी' में दो ही सिलेबल हैं पर 'पाणिनि' में तीन - 'पा', 'णि' और 'नि'। 'आ' शब्द में एक ही सिलेबल है और इसी तरह

'जा', 'ला', 'ना', 'गा' आदि में भी। आम तौर पर शब्दों में सिलेबल को पहचानना आसान होता है किन्तु कई बार जब जोड़े आते हैं तो इसके लिए भाषाई व भाषा वैज्ञानिक ज्ञान की ज़रूरत हो जाती है।

स्वनिम (Phoneme) – किसी भी भाषा के शब्दों व सिलेबल में ध्वनि की सबसे छोटी, विशिष्ट इकाई। उदाहरण के लिए, हिन्दी के शब्द 'मीत' में सिलसिलेवार तीन स्वनिम हैं – [म], [ई] और [त]। इसी तरह अँग्रेज़ी के tip शब्द में तीन स्वनिम [t], [i] और [p] हैं।

स्वनिम की गहरी और विस्तारित परिभाषाएँ अलग-अलग सिद्धान्त में अलग-अलग हैं। लेकिन मोटे तौर पर दो शब्द अलग-अलग स्वनिमों से बने हैं, यह तभी कहा जा सकता है, जब वे अलग-अलग तरह से ध्वन्यात्मक अन्तर दर्शाते हों। ऐसे अन्तर जिनसे उनके अर्थ में भी फर्क दिखता हो। इस तरह हिन्दी में ;'मीत' और 'मात' में फर्क है। और यह फर्क [ई] और [आ] दो अलग-अलग स्वनिम कि वजह से है। अँग्रेज़ी से उदाहरण लें तो tip और tap में फर्क है और यह [i] और [a] की वजह से है। इसी तरह 'जीम' (राजस्थानी हिन्दी का शब्द जिसका मतलब होता है खाना खा लो) और 'जाम' में फर्क है, और यह फर्क ई और आ की वजह से है। यानी ई और आ दोनों शब्दों की वे सबसे छोटी विशिष्ट इकाइयाँ हैं जो शब्दों को विशिष्ट अर्थ देने की क्षमता रखती हैं। दूसरी बात जो साथ ही साथ सही है वह यह कि ये विशिष्ट ध्वनियाँ अलग-अलग समय अन्तराल पर बोली जाती हैं। यानी आप एक ही समय पर दोनों ध्वनियाँ नहीं बोल सकते। और तीसरी बात यह की ई और आ दोनों फोनीम हैं और इसलिए हैं क्योंकि इन्हें और ज़्यादा छोटी इकाइयों में विभक्त नहीं किया जा सकता। यह बात इस आधार के भी संगत है कि दोनों छोटी इकाइयों को बोलने में कुछ समय का अन्तराल तो होता ही है चाहे यह अन्तराल क्षणिक ही हो

रूपिम (Morpheme) – व्याकरण की एक सार्थक इकाई जो शब्द से छोटी होती है। लेकिन यह इकाई शब्द से अलग है क्योंकि इसका स्वतंत्र अर्थ हो यह ज़रूरी नहीं। किन्तु शब्द में यह उसका अर्थ बनाती है और इसका अपना स्वतंत्र अर्थ भी हो सकता है व अर्थ में बदलाव और कुछ जोड़ने का कार्य भी यह कर सकती है। उदाहरण के लिए 'गैर-ज़रूरी' में 'गैर' और 'ज़रूरी' दोनों रूपिम हैं। और अँग्रेज़ी में incoming शब्द में in, -come व -ing तीनों रूपिम हैं।

यह शब्द 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पहली बार काम में लिया गया था। इसके तीन मुख्य पहलुओं को हम इस तरह समझ सकते हैं। पहला वह इकाई जो शब्द से छोटी होती है और जिसका एक स्वतंत्र अर्थ नहीं होकर व्याकरणिक अर्थ होता है।

दूसरा, शब्द के अन्दर ध्वन्यात्मक इकाइयों का कोई भी ऐसा विन्यास, जिसका या तो व्याकरणिक अर्थ होता है या शाब्दिक अर्थ होता है वह रूपिम है। मिसाल के लिए, गैर-ज़रूरी में 'गैर' और 'ज़रूरी'। इसमें 'गैर' का व्याकरणिक अर्थ यह है कि यह जिस भी शब्द के साथ आएगा उसमें नकारात्मकता का एहसास कराएगा। गैर-ज़िम्मेदाराना, गैर-मौजूदगी, गैर-कानूनी यह एक व्याकरणिक वर्ग बन जाता है। लेकिन साथ ही 'गैर' का शाब्दिक अर्थ भी है जिसका मतलब है बिना जान-पहचान का।

तीसरा यह कि वह अपरिवर्तनीय, शाब्दिक और व्याकरणिक इकाई है जो एक अथवा अधिक ध्वन्यात्मक इकाइयों के विन्यास द्वारा महसूस की जा सकती है जैसे नकारात्मकता का एहसास 'गैर' से भी हो सकता है जैसे कि हमने ऊपर उदाहरणों में देखा और 'अ' से भी जैसे 'असत्य' या 'अपूर्ण' में और 'अन' से भी।

अँग्रेज़ी का शब्द unladylike तीन रूपिम और चार शब्दांशों से बना है।

इसमें un मोर्फीम है और यह 'नहीं' यानी not का एहसास देता है। 'lady' का अर्थ 'अच्छा व्यवहार करने वाली औरत से है। और like 'जैसी' का अर्थ देता है। इनमें से किसी भी मोर्फीम को और छोटे टुकड़ों में नहीं तोड़ा जा सकता। तोड़ने से उस मोर्फीम का शब्द में अर्थ खो जाएगा। lady को la और dy में नहीं तोड़ा जा सकता क्योंकि यह स्वतंत्र सिलेबल हैं।

शब्द (Word) - संवाद की सबसे छोटी सार्थक इकाई है शब्द। शब्दों को बनाने के कई आधार हैं, मोटे तौर पर शब्द वो सबसे छोटी इकाई होती है जो अपने आप में एक उद्‌गार (utterance) बना सकता है। ब्लूमफील्ड की शब्दावली के अनुसार शब्द सबसे छोटा स्वतंत्र रूप (Minimal Free Form) है। जैसे किसी सन्दर्भ में 'जाओ', 'आइए', 'बढ़िया' आदि अपने आप में सम्पूर्ण अर्थ व्यक्त कर सकते हैं।

सन्दर्भ

- आर एल ट्रास्क, 2003, *लैंग्वेज: द बेसिक्स*, न्यू यॉर्क: रूटलेज।
- https://en.wikipedia.org/wiki/Hockett%27s_design_features